नवोन्मेष
रुक्टा (राष्ट्रीय)

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
(अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से संबद्ध)

website: www.ructarashtriya.org **Email:** info@ructarashtriya.org, ructarashtriya@gmail.com

केन्द्रीय कार्यालय : देराश्री शिक्षक सदन, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004
प्रधान कार्यालय : सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305001 (राज.)
अध्यक्ष : डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर मो. 9414452369, 9983007575
महामंत्री : डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर मो. 9414497042

परिपत्र क्रं. : रुक्टा (रा.)/2016-17/04 **माघ शु. ०९ वि. स. २०७३ तदनुसार 05 फरवरी, 2017**
(सभी इकाई सचिवों एवं सक्रिय सदस्यों को समस्त सदस्यों में प्रसारित करने के अनुरोध सहित प्रेषित)

प्रिय महोदय/महोदया,

सादर नमस्कार।

पिछले परिपत्र के पश्चात् राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में सम्पन्न संगठन के 55वें प्रान्तीय अधिवेशन के विवरण, महामंत्री प्रतिवेदन, अंकेक्षित आय-व्यय लेखा एवं साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्तावों के साथ यह परिपत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है।

55वें प्रांतीय अधिवेशन का विवरण

संगठन का 55वाँ प्रान्तीय अधिवेशन 11-12 जनवरी 2017 को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के कॉन्वोकेशन सेन्टर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में सम्पूर्ण राज्य से राजकीय महाविद्यालयों, निजी महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के 3000 से अधिक संभागियों ने भाग लिया। अधिवेशन के संभागियों में महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षक, कॉलेज शिक्षा संयुक्त निदेशक, उपनिदेशक सहित सेवानिवृत्त शिक्षक भी सम्मिलित थे।

देराश्री स्मृति व्याख्यान - 11 जनवरी 2017 को अधिवेशन के प्रथम सत्र में संगठन के संस्थापक अध्यक्ष प्रो. सत्यदेव देराश्री की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह-प्रचार प्रमुख श्री जे. नंद कुमारजी रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के 70 वर्ष की भारतीय शिक्षा के चित्र को सामने रखते हुए श्री जे. नन्द कुमारजी ने उपस्थित शिक्षक समुदाय से प्रश्न किया कि 'सा विद्या या विमुक्तये' जैसी बड़ी-बड़ी बातें भारत में हम बताते हैं किन्तु शिक्षा से दृष्टि व दिशा देते हैं क्या? क्या इसकी जवाबदारी सिर्फ सत्ता या सरकार में नीतियों का निर्णय लेने वाले कुछ व्यक्तियों पर थोप सकते हैं क्या? इसको ठीक दिशा देने की जिम्मेदारी हमारी भी है या नहीं? यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हमें 70 वर्ष पश्चात यह सोचना पड़ रहा है कि अब तक देश कौन-सी शिक्षा नीति के आधार पर आगे बढ़ा, क्योंकि हम फिर से एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चा कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पश्चिमी विचारों से प्रभावित बुद्धिजीवियों का एक खास वर्ग मानविकी, सामजिक विज्ञान और साहित्यिक अध्ययन पर कब्जा जमाए बैठा है, जो यूरोप केन्द्रित ज्ञान को यहाँ प्रचारित करने में लगा है। इसके पीछे विश्व वामपंथ संगठन है। ऐसा काला धन शिक्षा प्रणाली में खूब है और यहाँ भी एक सर्जिकल स्ट्राइक की आवश्यकता है, एक डीमोनीटाइजेशन की जरूरत है। ऐसे लोगों और विचारों के कारण हमारे विश्वविद्यालयों में विद्रोह हो रहा है। विश्व के अनेकानेक देश यथा आस्ट्रेलिया, कनाड़ा, दक्षिणी अफ्रीका आदि के अकादमिक लोग इन खतरों का मुकाबला कर रहे हैं। हमारे यहाँ भी एक सांस्कृतिक अध्ययन की अति आवश्यकता है। भारतीय विचारधारा के अनुरूप एक वैश्विक विचार हमें समाज के सम्मुख रखना होगा। सरकार के साथ-साथ हम जैसे शिक्षाविद इस परिवर्तन में भागीदारी करें, ऐसी आज आवश्यकता है। सत्र की अध्यक्षता महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय,

अजमेर के कुलपति प्रो. कैलाशजी सोडाणी ने की। उन्होंने अपने वक्तव्य में प्रो. देराश्री के जीवन आदर्शों का उल्लेख करते हुए भारतीय ज्ञान परम्परा तथा भारतीय विज्ञान के इतिहास पर प्रकाश डाला एवं संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने का आह्वान किया। प्रो. सत्यदेव देराश्री का जीवन परिचय महामंत्री ने प्रस्तुत किया जबकि आभार संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजय सिंह शेखावत द्वारा व्यक्त किया गया।

उद्घाटन सत्र – सरस्वती वन्दना के साथ प्रारम्भ उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजेजी एवं अध्यक्ष उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी रही। इस ऐतिहासिक अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में ही मुख्यमंत्री महोदया ने प्रदेश के महाविद्यालय शिक्षकों का पदनाम व्याख्याता से असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रोफेसर करने की घोषणा की। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हम सभी मिलकर प्रदेश में सुख समृद्धि स्थापित करेंगे। कर्त्तव्य बोध जागरण और राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाने का काम जो रुक्टा (राष्ट्रीय) कर रहा है वह निश्चय ही सराहनीय है। उन्होंने गुरु शिष्य परम्परा पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा से जुड़े अपने जीवन के अनुभव बाँटे और इस गौरवशाली परम्परा को कायम रखने का आह्वान किया। उन्होंने लोक सेवा आयोग से व्याख्याताओं की भर्ती नवीन सत्र तक पूरा करने की घोषणा करते हुए दिसम्बर 2018 तक सभी संभावित रिक्त पदों पर भी भर्ती करने का मंतव्य व्यक्त किया। मुख्यमंत्रीजी ने यह भी कहा कि महाविद्यालयों में पुस्तकालयाध्यक्षों एवं शारीरिक शिक्षकों के क्रमशः 129 एवं 148 पदों पर भर्ती हेतु नियमों में संशोधन कर दिया गया है तथा शीघ्र ही इनकी भर्ती प्रक्रिया पूर्ण की जायेगी। उन्होंने राज्य में मूक व बधिर बच्चों के लिए पहला महाविद्यालय खोलने की घोषणा करते हुए स्वरोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम विकसित करने एवं कौशल विकास को बढ़ावा देने पर बल दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्ष उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी ने प्रदेशभर के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में नई नियुक्तियाँ, नये महाविद्यालयों की स्थापना एवं उनका विकास करने हेतु सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए 1994 के पश्चात् नियुक्त शिक्षकों की वरिष्ठता सूची, स्थायीकरण आदेश, पूर्व सेवा लाभ जैसी लंबित समस्याओं का निवारण शीघ्र करने का विश्वास दिलाया। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री एवं कार्यक्रम के आयोजन अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघलजी ने स्वागत भाषण देते हुए संगठन के कार्यकलापों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संगठन शिक्षक समस्याओं को हल करवाने के साथ साथ सांस्कृतिक विकास और समाज उत्थान का काम भी करता है एवं शिक्षकों को कर्त्तव्य बोध करवाता है। देश में मूल्यों के क्षरण को रोकने का काम संगठन अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कर रहा है। संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत ने शिक्षा एवं समाज के प्रति जिम्मेदारी की महत्ता पर बल देते हुए शिक्षकों से अपने उत्तरदायित्व निभाने का आह्वान किया। संगठन महामंत्री ने उच्च शिक्षा के प्रति शिक्षकों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्रीजी से विभिन्न शिक्षक समस्याओं का शीघ्र हल करने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री द्वारा पदनाम परिवर्तन की घोषणा करने पर उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी प्रो. जे. पी. सिंघल जी एवं संगठन महामंत्री ने पुष्प गुच्छ भेंट कर मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया और विश्वास जताया कि उच्च शिक्षा उनके नेतृत्व में नये आयाम प्राप्त करेगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विक्रमजीत एवं डॉ. अनिल दाधीच ने किया। आभार प्रदर्शन आयोजन सचिव डॉ. राजेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम के अंत में राजस्थान संगीत संस्थान की छात्राओं एवं शिक्षकों द्वारा वन्दे मातरम् प्रस्तुत किया गया।

खुला सत्र एवं साधारण सभा – अधिवेशन के प्रथम दिवस सायंकाल खुला सत्र एवं साधारण सभा का आयोजन किया गया। इस सत्र में शिक्षक प्रतिनिधियों द्वारा शिक्षक समस्याओं का प्रस्तुतीकरण किया गया। महामंत्री ने वर्ष भर में संगठन द्वारा शिक्षक समस्याओं के समाधान में हुई उपलब्धियों एवं गतिविधियों तथा सम्पन्न सांगठनिक-वैचारिक कार्यक्रमों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसे सदन द्वारा सर्व-सम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके पश्चात प्रान्तीय कोषाध्यक्ष डॉ. अखिलेश्वर शर्मा ने 31 मार्च 2016 को सम्पन्न वित्तीय वर्ष का आय-व्यय लेखा व चिट्ठा सदन के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे सभा द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके अतिरिक्त साधारण सभा द्वारा तीन प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किए गये –

1. शैक्षणिक परिसरों को ज्ञान के सर्वोत्कृष्ट केन्द्र बनाने के लिए समन्वित प्रयास किए जाएँ। 2. भारतीय परिवार व्यवस्था के संरक्षण में अपनी भूमिका निभाएँ। 3. राज्य की उच्च शिक्षा क्षेत्र के उन्नयन हेतु शिक्षा व शिक्षकों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता से किया जाये। साधारण सभा द्वारा गत अधिवेशन के पश्चात दिवंगत शिक्षक साथियों को दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि भी दी गई।

शैक्षिक संगोष्ठी – अधिवेशन के द्वितीय दिवस 12 जनवरी 2017 को आयोजित शैक्षिक संगोष्ठी का विषय ''उच्च शिक्षा में जबावदेही व पारदर्शिता'' रहा। सत्र के मुख्य वक्ता केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के निदेशक प्रो. नंद किशोर पाण्डेय ने अपने वक्तव्य में कहा कि जो शिक्षा विद्यार्थी के जीवन संग्राम में विजयी व चारित्रिक गुण विकसित करे वही सच्ची शिक्षा है। विद्यार्थी की प्राथमिक शिक्षा उच्च कोटि की होनी चाहिए जिससे वह जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ सके। उन्होंने कहा कि आज भी हजारों शिक्षक

ऐसे हैं जो छात्र को हाथ पकड़ कर सफलता की ओर बढ़ाते हैं। उन्होंने तक्षशिला विश्वविद्यालय का उदाहरण देते हुए कहा कि शिक्षक का छात्र के साथ व दोनों का समाज के साथ गहरा संबंध है। आज के शिक्षक को ज्ञान-अर्जन के साथ-साथ ज्ञान-सर्जन करना होगा। समारोह के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. आर. पी. सिंह ने बताया कि आज देश में संस्कारयुक्त शिक्षा की जरूरत है। माता-पिता, गुरू तीनों को श्रेष्ठ होना अनिवार्य है। यदि बेटा तरक्की करता है तो माँ-बाप को खुशी होती है, यदि छात्र तरक्की करता है तो गुरूजनों को खुशी होती है। सूचना के इस युग में शिक्षक को भी लगातार अध्ययनरत रहना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि देश में पर्याप्त संसाधन नहीं है, लेकिन ज्ञान ही सबसे बड़ा संसाधन है। संगोष्ठी में डॉ. राजेश जोशी, डॉ. ओम प्रकाश पारीक, डॉ. गीताराम शर्मा, डॉ. सरोज कुमार, डॉ. कश्मीर भट्ट, डॉ. बालूदान बारहठ, डॉ. सुदर्शन सिंह राठौड़, डॉ. परमेश्वर दत्त राजौरा, डॉ. श्योराज सिंह परमार आदि शिक्षकों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का संचालन डॉ. भवानीशंकर शर्मा ने किया तथा धन्यवाद डॉ. शिवशरण कौशिक ने दिया।

नवीन कार्यकारिणी की घोषणा - शैक्षिक संगोष्ठी के पश्चात् संगठन के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संतोष पाण्डेय ने आगामी दो वर्षों के लिए मनोनीत प्रान्तीय कार्यकारिणी की घोषणा की, जिसे सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। नवीन कार्यकारिणी के विभिन्न पदों पर मनोनयन इस प्रकार है -

अध्यक्ष - डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर **महामंत्री** - डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर

उपाध्यक्ष - (1) राजकीय-डॉ. सत्यनारायण शर्मा, अनूपगढ़ (2) महिला-डॉ. सरस्वती मित्तल, जयपुर (3) विश्वविद्यालय-डॉ. राजीव सक्सेना, जयपुर (4) निजी-डॉ. सुमित्रा पारीक, चौमूं

संयुक्त सचिव - (1) राजकीय - डॉ. गंगाश्याम गुर्जर, अलवर (2) महिला-डॉ. रेखा भट्ट, उदयपुर (3) विश्वविद्यालय-डॉ. हीराराम, जोधपुर (4) निजी-डॉ. योगेश गुप्ता, जयपुर

कोषाध्यक्ष - डॉ. अखिलेश्वर शर्मा, जयपुर **अंकेक्षक** - डॉ. महेन्द्र गोखरु, अजमेर

संगठन मंत्री - डॉ. ग्यारसीलाल जाट, सीकर **सहसंगठन मंत्री** - डॉ. सुशील कुमार बिस्सु, अजमेर, डॉ. दीपक शर्मा, जयपुर

संभाग संगठन मंत्री - जयपुर - डॉ. सुरेन्द्र डी. सोनी, चुरू; चित्तौड़ - डॉ. कश्मीर भट्ट, भीलवाड़ा; जोधपुर - डॉ. हरिसिंह राजपुरोहित, ओसियाँ

प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य - (1) डॉ. शशिकांत, बीकानेर (2) डॉ. नेमीचन्द गर्ग, जैसलमेर (3) डॉ. सुदर्शन राठौड़, उदयपुर (4) डॉ. गीताराम शर्मा, कोटा (5) डॉ. राजेश जोशी, बांसवाड़ा (6) डॉ. मनोज बेहरवाल, अजमेर (7) डॉ. सतीश त्रिगुणायत, भरतपुर (8) डॉ. रामस्वरूप मीणा, टोंक (9) डॉ. ऋतु गुप्ता, अलवर (10) डॉ. पप्पूलाल गुप्ता, जयपुर (11) डॉ. राजेश जांगिड़, कोटपुतली (12) डॉ. रामनिवास चौधरी, जयपुर **देराश्री शिक्षक भवन प्रभारी** - डॉ. संजीव त्यागी, जयपुर

विशेष आमंत्रित - (1) डॉ. राजेन्द्र शर्मा, जयपुर (2) डॉ. कमल मिश्रा, जयपुर

शैक्षिक प्रकोष्ठ - संयोजक - डॉ. विक्रमजीत, बीकानेर; सहसंयोजक - डॉ. ऋतु सारस्वत, पुष्कर

प्रचार प्रकोष्ठ - संयोजक - डॉ. विवेक मंडोत, डूंगरपुर; सहसंयोजक - डॉ. अनिल दाधीच, अजमेर

कृषि प्रकोष्ठ - संयोजक - डॉ. सीताराम कुमावत, चिमनपुरा; सहसंयोजक - डॉ. भगतसिंह, सवाईमाधोपुर

विधि प्रकोष्ठ - संयोजक - डॉ. उषा यादव, अलवर; सहसंयोजक - डॉ. दिलसुख थालोर, सीकर

शिक्षक प्रशिक्षण प्रकोष्ठ - संयोजक - डॉ. अशोक सिडाना, जयपुर

सेवानिवृत्त शिक्षक प्रकोष्ठ - संयोजक - डॉ. घनश्यामलाल, अलवर

समारोप कार्यक्रम - समारोप सत्र के मुख्य वक्ता शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग के अनुसंधान अधिकारी एवं रा. स्व. संघ के क्षेत्र कार्यवाह श्री हनुमान सिंह जी राठौड़ ने कहा कि आज भोगवाद की प्रवृत्ति भारत और विश्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। शिक्षक को कर्त्तव्य बोध होना अनिवार्य है। यज्ञमय संस्कृति ही श्रेष्ठ संसार बना सकती है। उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम् का उदाहरण देते हुए भारत की परिवार व्यवस्था को विश्व में आदर्श उदाहरण बताया। उन्होंने आह्वान किया कि शिक्षक का छात्रों के प्रति अपनत्व व दोनों का शिक्षण संस्था के प्रति अपनत्व होना चाहिए। समारोप सत्र की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र जी कपूर ने कहा कि धर्म ही देश की रीढ़ है। शिक्षक ही छात्रों में राष्ट्र धर्म पैदा कर सकता है। कार्यक्रम के अन्त में आयोजन सचिव डॉ. राजेन्द्र शर्मा व संगठन महामंत्री ने सभी का आभार व्यक्त किया। अधिवेशन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र प्रचारक श्री दुर्गादासजी, रुक्टा (राष्ट्रीय) के पूर्व अध्यक्षगण प्रो. पुरुषोत्तमजी चतुर्वेदी, प्रो. संतोषजी पाण्डेय, जयपुर प्रांत प्रचारक श्री निम्बारामजी, सहप्रांत प्रचारक डॉ. शैलेन्द्रजी, क्षेत्र बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री कैलाशजी, विराटनगर विधायक डॉ. फूलचन्दजी भिण्डा सहित अनेक गणमान्य बंधुओं का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

विमोचन – संगठन पिछले कुछ वर्षों से सामाजिक/शैक्षिक महत्व के किसी विषय को लेकर शिक्षकों एवं समाज के वैचारिक प्रबोधन हेतु प्रदेश अधिवेशन में एक स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है। इस अधिवेशन में भारतीय परिवार व्यवस्था की श्रेष्ठता पर आधारित स्मारिका ''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' का विमोचन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी, उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी द्वारा किया गया। स्मारिका में देश के जाने माने चिन्तकों के अलावा राज्य की उच्च शिक्षा में कार्यरत विद्वानों के लेखों का संकलन है। इसके अतिरिक्त उद्घाटन सत्र में अतिथियों द्वारा शैक्षिक मंथन पत्रिका के विशेषांक ''**कर्त्तव्य पथ**'' का भी विमोचन किया गया। इस वर्ष संगठन द्वारा शैक्षिक मंथन संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विभाग स्तर पर शिक्षा के समुन्नयन से संबंधित विषयों पर 7 राष्ट्रीय/प्रादेशिक संगोष्ठियाँ आयोजित की गई। इन संगोष्ठियों में प्रस्तुत चयनित शोध पत्रों का प्रकाशन संगठन द्वारा ''**शिक्षा समुत्कर्ष**'' नाम से किया गया है। इस शोध पुस्तिका का विमोचन समारोप कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा किया गया।

प्रदेश कार्यकारिणी बैठक – संगठन की प्रदेश कार्यकारिणी बैठक देराश्री शिक्षक सदन, जयपुर में 10 जनवरी को आयोजित की गई। सर्वप्रथम महामंत्री द्वारा गत बैठक का कार्यवाही विवरण प्रस्तुत किया गया। जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके बाद गत बैठक के पश्चात् संगठन की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। बैठक में महामंत्री प्रतिवेदन, प्रस्ताव एवं आय-व्यय विवरण पर चर्चा कर अन्तिम रूप दिया गया। सामूहिक कल्याण मंत्र के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

शुभकामना संदेश – 55वें प्रान्तीय अधिवेशन की सफलता एवं इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' हेतु पू. सरसंघचालक मा. मोहनरावजी भागवत, सरकार्यवाह मा. भय्याजी जोशी, राज्यपाल मा. कल्याण सिंहजी, मुख्यमंत्री मा. वसुन्धरा राजेजी, उच्च शिक्षामंत्री मा. किरण माहेश्वरीजी एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संरक्षक मा. के. नरहरि जी के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। संगठन सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम परिवर्तन हेतु आभार – अधिवेशन में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजेजी द्वारा महाविद्यालय शिक्षकों का पदनाम व्याख्याता से असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रोफेसर करने की घोषणा की गई। शिक्षकों की इस महत्वपूर्ण लंबित समस्या को हल करने के लिए संगठन सरकार का, विशेष रूप से मुख्यमंत्री श्रीमती वंसुधरा राजे जी, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री कालीचरण जी सराफ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री अशोक जी परनामी एवं भाजपा प्रदेश प्रभारी वी. सतीश जी का हृदय से आभार व्यक्त करता है।

केन्द्र की योजनानुसार संगठन की विभिन्न इकाईयों द्वारा कर्त्तव्य बोध दिवस सम्पन्न हुए हैं, इन कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट आगामी परिपत्र में दी जाएगी। पदनाम परिवर्तन हेतु नियम बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है, विश्वास है कि शीघ्र ही प्रशासनिक प्रक्रियाएँ पूर्ण होकर मुख्यमंत्रीजी की घोषणानुसार हमें अपना अधिकार प्राप्त होगा। पदनाम परिवर्तन हेतु लम्बे संघर्ष में आप सब शिक्षक साथियों ने संगठन पर विश्वास जताते हुए जो साथ दिया है-सहयोग किया है, उसके लिए आपको करबद्ध प्रणाम करता हूँ। संगठन के प्रति आपका सहयोग, समर्थन, विश्वास एवं प्रेम इसी प्रकार बना रहे और हम सब मिल कर राजस्थान की उच्च शिक्षा को निरन्तर प्रगति के पथ पर ले जाएँ, यही प्रार्थना एवं शुभकामना है।

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

20, चित्रकूट कॉलोनी,
माकड़वाली रोड़, अजमेर-305004

अमृत वचन

''अध्यात्म का शिक्षा के साथ समन्वय आवश्यक है। हमें स्वानुभूति को केन्द्रित करना होगा। हम सभी को अपने-अपने उच्च बौद्धिक धरातल के प्रति जागरूक बनना होगा। हम महान् अतीत को उज्ज्वल भविष्य से जोड़ने वाली कड़ी हैं। हमें अपनी सुप्तावस्था में पड़ी आंतरिक ऊर्जा को प्रज्ज्वलित करना होगा ताकि वह हमारा मार्गदर्शन कर सके। रचनात्मक प्रयास में रत ऐसी मेधाओं का प्रकाश इस देश में शांति, समृद्धि और सुख लाएगा।''

– डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
55वाँ प्रांतीय अधिवेशन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

दिनांक 11-12 जनवरी 2017

महामंत्री प्रतिवेदन

संगठन का 54 वाँ प्रदेश अधिवेशन 31 दिसम्बर 2015 व 1 जनवरी 2016 को **श्री कल्याण राजकीय महाविद्यालय, सीकर** में सम्पन्न हुआ। 54वें अधिवेशन एवं उसके पश्चात् शिक्षक समस्याओं के समाधान हेतु संगठन द्वारा किए गए प्रयासों एवं उपलब्धियों के साथ सम्पन्न सांगठनिक एवं वैचारिक कार्यक्रमों का विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत है-

शिक्षक समस्याओं के संबंध में उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

1. पदनाम परिवर्तन हेतु संगठन के घनीभूत प्रयास

(अ) विशाल प्रदर्शन

7 नवम्बर 2016 को संगठन के आह्वान पर सम्पूर्ण प्रदेश से उच्च शिक्षा में कार्यरत 4000 से अधिक शिक्षकों ने पदनाम परिवर्तन की माँग को लेकर मुख्यमंत्री निवास पर विशाल प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में महिला शिक्षकों की सहभागिता रही। विधानसभा के सामने ज्योति नगर टी पाइंट से अनुशासनबद्ध पक्तियों में शिक्षकों ने माँगों के समर्थन में प्लेकार्ड्स एवं अपनी संगठन इकाईयों के बैनर आदि लेकर नारे लगाते हुए सिविल लाइन्स फाटक तक रैली निकाली एवं एक विशाल सभा आयोजित की। संगठन की कार्यपद्धति के अनुरूप ही प्रदर्शन में किसी तरह के नकारात्मक/व्यक्तिगत नारे नहीं लगाए गए। प्रदर्शन के दौरान संगठन के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री निवास पर उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ व अन्य अधिकारियों के साथ भेंट कर यू.जी.सी. रेग्यूलेशन के अनुरूप पदनाम परिवर्तन करने हेतु मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया। संगठन द्वारा सकारात्मक कार्यवाही नहीं होने पर भविष्य में संघर्ष तेज करने का मंतव्य प्रकट किया गया।

(आ) मंत्रीगण एवं अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठकें

11 मई 2016 को मुख्यमंत्री कार्यालय में पदनाम परिवर्तन के संबंध में उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरणजी सराफ की अध्यक्षता में अतिरिक्त मुख्य सचिव (उच्च शिक्षा), प्रमुख शासन सचिव (वित्त), प्रमुख शासन सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) एवं भा.ज.पा. प्रदेश अध्यक्ष श्री अशोकजी परनामी के साथ संगठन महामंत्री की बैठक सम्पन्न हुई। संगठन की ओर से शिक्षकों का पक्ष 500 से अधिक पृष्ठों के प्रतिवेदन के साथ रखते हुए महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर करने तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्रोफेसर पद के सृजन की माँग की गई।

संगठन द्वारा 7 नवम्बर 2016 को पदनाम परिवर्तन के लिए जयपुर में किए अभूतपूर्व प्रदर्शन के पश्चात् मुख्यमंत्री जी के निर्देशानुसार 21 नवम्बर 2016 को प्रमुख शासन सचिव (वित्त) श्री प्रेमसिंह मेहरा एवं आयुक्त कॉलेज शिक्षा श्री आशुतोष ए.टी. पेडणेकर के साथ संगठन के प्रतिनिधि मंडल की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संगठन द्वारा पदनाम से जुड़े विभिन्न तथ्यों एवं देश के अन्य राज्यों के आदेशों के साथ अपना पक्ष रखा गया।

2 जनवरी 2017 को मुख्यमंत्री कार्यालय में संगठन के प्रतिनिधि मंडल की उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री कालीचरण सराफ, अतिरिक्त मुख्य सचिव (उच्च शिक्षा), प्रमुख शासन सचिव (वित्त), प्रमुख शासन सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय), आयुक्त कॉलेज शिक्षा एवं वित्त विभाग के अन्य अधिकारियों के साथ विस्तृत वार्ता हुई। संगठन ने स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में यू.जी.सी. नियमानुसार प्रोफेसर पद सृजित करने हेतु विस्तृत तथ्य प्रस्तुत किये एवं वित्त विभाग की आपत्तियों/प्रश्नों के समुचित समाधान प्रस्तुत किये।

(इ) *मुख्यमंत्रीजी के नाम हस्ताक्षर एवं जनप्रतिनिधियों के समर्थन पत्र का अभियान*

महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम परिवर्तन के संबंध में राज्य सरकार पर दबाव बनाते हुए संगठन द्वारा सम्पूर्ण राज्य से इकाईश: मुख्यमंत्री को प्रेषित ज्ञापन पर शिक्षकों के हस्ताक्षर का अभियान हाथ में लिया गया, साथ ही स्थानीय जनप्रतिनिधियों से मिल कर समर्थन पत्र लिखवाना तय किया गया। सभी सक्रिय कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों ने पूरी ऊर्जा से इस अभियान में योगदान दिया। परिणामत: मुख्यमंत्री के नाम 4067 शिक्षकों द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन एवं राज्य के 86 जनप्रतिनिधियों के समर्थन पत्र सरकार को भेजे गये।

(ई) *पदनाम परिवर्तन हेतु भेंटवार्ताएँ*

संगठन द्वारा पदनाम परिवर्तन हेतु वर्ष भर राज्य एवं केन्द्र के मंत्रीगणों व राजनेताओं से भेंटवार्ताएँ कर दबाव बनाया गया।

* ***मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजेजी से भेंट –*** 12 अप्रैल 2016 को संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने पदनाम परिवर्तन को लेकर मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजेजी से उनके निवास स्थान पर विस्तृत भेंट की। संगठन द्वारा मुख्यमंत्री के समक्ष देश के विभिन्न राज्यों में यू.जी.सी. रेग्यूलेशन के अनुसार परिवर्तित पदनाम का तुलनात्मक वृत्त प्रस्तुत करते हुए राज्य के शिक्षकों एवं व्यापक रूप से राज्य के उच्च शिक्षा क्षेत्र को हो रहे नुकसान की जानकारी दी। पिछली सरकार द्वारा गलत घोषणा पत्र देकर केन्द्र सरकार से अनुदान लेने संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण जी सराफ द्वारा की गई घोषणा के उपरांत भी पदनाम परिवर्तन नहीं होने पर हताश शिक्षक समुदाय की भावनाओं को मुख्यमंत्रीजी के सामने व्यक्त किया गया।
* ***उच्च शिक्षामंत्रीजी से भेंट –*** संगठन द्वारा 5 मार्च, 31 मई एवं 26 दिसम्बर व 2 जनवरी को उच्च शिक्षामंत्रीजी से की गई भेंटों में शीघ्र पदनाम परिवर्तन करने की माँग की।
* ***केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री प्रो. रामशंकर कठेरिया से भेंट –*** संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने 31 मार्च 2016 को भारत सरकार में मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री प्रो. रामशंकर जी कठेरिया से भेंट कर पदनाम परिवर्तन करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा निर्देश जारी करने की माँग की।
* ***राज्य सरकार के अन्य मंत्रियों एवं विधायकों से भेंट –*** संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने राज्य के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया, संसदीय कार्यमंत्री श्री राजेन्द्र राठौड़, सामाजिक न्याय मंत्री श्री अरुण चतुर्वेदी, शिक्षामंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी, भाजपा अध्यक्ष श्री अशोक परनामी सहित अनेक विधायकों से भेंटकर महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम परिवर्तन से संबंधी समस्त पत्रावली प्रस्तुत कर पदनाम परिवर्तन में आ रही प्रशासनिक समस्याओं का समाधान करवाने का आग्रह किया।
* ***राज्यसभा सदस्य श्री भूपेन्द्रजी यादव से भेंट –*** 24 जून 2016 को राज्य सभा सदस्य एवं भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री भूपेन्द्रजी यादव से भेंट कर महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम परिवर्तन के बारे में आवश्यक दस्तावेज सौंपते हुए समस्या को हल करवाने हेतु सहयोग का आग्रह किया गया।
* ***केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री महेन्द्रनाथजी पांडे एवं केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री अर्जुन रामजी मेघवाल से भेंट –*** संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री महेन्द्रनाथजी पांडे से भेंट कर राज्य में यू.जी.सी. नियमानुसार पदनाम परिवर्तन की माँग की। संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल से भेंट करके उनसे भी पदनाम परिवर्तन की समस्या के समाधान में प्रभावी भूमिका निभाने का आग्रह किया।

2. **प्राचार्य एवं उपाचार्य पदों पर डी.पी.सी. पश्चात पदस्थापन** - महाविद्यालयों के सुचारू संचालन एवं शिक्षकों को समय पर पदोन्नति मिलने के संबंध में संगठन के लगातार प्रयासों से वर्ष 2016-17 तक के लिए प्राचार्य एवं उपाचार्य पदों हेतु डी.पी.सी. आयोजित कर अगस्त माह में राज्य के महाविद्यालयों में प्राचार्य एवं उपाचार्य के खाली पदों पर पदस्थापन किया गया। वर्ष 2016-17 तक की डी.पी.सी. होने से मार्च 2017 तक महाविद्यालयों में प्राचार्य / उपाचार्य पद रिक्त नहीं रहेंगे जिससे महाविद्यालयों का प्रशासनिक संचालन सुदृढ़ हो सकेगा।

3. **कॅरियर एडवान्समेन्ट योजना के अन्तर्गत 30 जून 2015 तक पात्र शिक्षकों को वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान का लाभ** - सी.ए.एस.योजना के तहत वरिष्ठ/चयनित वेतनमान एवं पे बैंड-4 हेतु संवीक्षा बैठक समयबद्ध आयोजित करवाने के संगठन के प्रयासों की परिणति के रूप में दिनांक 30-6-2015 तक ड्यू वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान हेतु संवीक्षा समिति की बैठक कर पात्र शिक्षकों को वरिष्ठ/चयनित वेतनमान का लाभ देने के आदेश प्रसारित किये गए।

4. **पे बैंड-4 में आगामी वेतन वृद्धि हेतु 6 माह की सेवा की आवश्यकता का आदेश वापिस** - 29 जनवरी 2016 को मुख्य लेखाधिकारी आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने एक पत्र जारी कर पे बैंड-4 में आगामी वार्षिक वेतनवृद्धि हेतु 1 जुलाई से 6 माह की न्यूनतम सेवा की आवश्यकता का आदेश जारी किया था। संगठन द्वारा दिए गए तथ्यों एवं तर्कों से सहमत होकर वित्त विभाग द्वारा उक्त 6 माह की सेवा प्रावधान को गलत माना गया। वित्त विभाग की आई.डी. के आधार पर आयुक्त कॉलेज शिक्षा ने संशोधन आदेश जारी कर मुख्य लेखाधिकारी द्वारा निकाले गये उक्त आदेश को निष्प्रभावी कर दिया।

5. **यूजीसी पे रिव्यू कमेटी के समक्ष राज्य के शिक्षकों का विस्तृत पक्ष प्रस्तुत** - केन्द्रीय कर्मचारियों के 7 वें वेतन आयोग के अनुरूप महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षकों के नवीन वेतनमान हेतु भोपाल में सम्पन्न यूजीसी पे रिव्यू कमेटी की कार्यशाला में संगठन द्वारा राज्य में शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं एवं अपेक्षाओं को विस्तार से रखा गया। संगठन ने पुरजोर आग्रह किया कि वेतन समीक्षा समिति द्वारा महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षकों के लिए नवीन वेतन पैकेज पर विचार करते समय पिछले वेतन आयोग की सब विसंगतियों को दूर किया जाना चाहिए। संगठन द्वारा राज्य के महाविद्यालय शिक्षकों के पदनाम, पीएचडी के लाभ तथा पूर्व/अन्यत्र की गई सेवा को पेंशन/पदोन्नति के लिए जोड़ने एवं सेवारत शिक्षकों को पीएचडी हेतु कोर्सवर्क से छूट देने/सवैतनिक अवकाश का प्रावधान करने जैसी समस्याओं की ओर कमेटी का ध्यान आकृष्ट किया गया। सातवें वेतन आयोग द्वारा महाविद्यालय शिक्षकों को सम्पूर्ण सेवाकाल में कम से कम 4 सुनिश्चित कॅरियर प्रगति देने का प्रावधान रखने का आग्रह किया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन के पेशे में प्रतिभाओं को आकर्षित करने के लिए केंद्रीय सरकारी सेवाओं के कर्मचारियों की तुलना में प्रवेश बिन्दु पर उच्च वेतन देने, अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सेवा का गठन करने, शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए शिक्षकों की नियमित भर्ती करने तथा एक सीमा से अधिक रिक्तियाँ होने पर राज्य सरकार को अनुदान बंद करने तथा पात्रता वापस लेने जैसे कठोर कदम उठाने के सुझाव दिये गए। संगठन द्वारा पे रिव्यू कमेटी से शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए शिक्षक शिक्षार्थी अनुपात 1: 25 तक सीमित करने की माँग भी की गई।

6. **2 जनवरी 2006 से 30 जून 2006 के मध्य अतिरिक्त वेतन वृद्धि संबंधी मुद्दे पर प्रगति** - 2 जनवरी 2006 से 30 जून 2006 के मध्य वार्षिक वेतन वृद्धि वाले शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों एवं शारीरिक शिक्षकों को अन्य राज्य कर्मचारियों की भांति एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने के लिए संगठन के दबाव के चलते वित्त विभाग ने इन अधिकारियों की संख्या एवं अनुमानित वित्तीय भार का आंकड़ा माँगा है। संगठन को विश्वास है कि इस प्रक्रिया के पश्चात् शिक्षकों को उनका वित्तीय अधिकार प्राप्त हो पाएगा।

7. **राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद् का गठन** - संगठन के लगातार दबाव के चलते राज्य सरकार ने राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद् का गठन कर दिया है। संगठन को विश्वास है कि इससे राज्य के उच्च शिक्षण संस्थानों के संरचनात्मक एवं शैक्षणिक स्तर में गुणात्मक वृद्धि होगी।

8 **पुस्तकालयाध्यक्षों एवं शारीरिक शिक्षकों को वरिष्ठ/चयनित वेतनमान एवं पे-बैंड-4 का लाभ** - संगठन के प्रयासों से आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने छठे वेतनमान के अनुरूप 31-12-2008 के बाद पात्र पुस्तकालयाध्यक्षों एवं शारीरिक शिक्षकों को वरिष्ठ/चयनित वेतनमान एवं पे बैंड-4 का लाभ देने के लिए कार्यवाही प्रारम्भ की है।

9. **निजी शिक्षण संस्थानों के लिए राज्य नियामक आयोग के गठन के संबंध में प्रयास** - निजी शिक्षण संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए संगठन लम्बे समय से राज्य

नियामक आयोग के गठन की माँग करता आया है। संगठन के लगातार प्रयासों से इस हेतु विभाग द्वारा तैयार विधेयक के प्रारुप को जारी किया गया। संगठन प्रयासरत है कि इस विधेयक को शीघ्र ही अन्तिम रूप देकर लागू किया जाए।

10. **संविदा शिक्षकों एवं रिक्त पदों पर नियुक्त सेवानिवृत्त व्याख्याताओं के मानदेय भुगतान की कार्यवाही** - संगठन महाविद्यालय में नियुक्त संविदा व्याख्याताओं एवं रिक्त पदों पर नियुक्त सेवानिवृत्त व्याख्याताओं के मानदेय को प्रतिमाह भुगतान करने के लिए लगातार माँग करता आया है। संगठन के प्रयासों से राज्य के महाविद्यालयों में नियुक्त संविदा शिक्षकों के मानदेय भुगतान के आदेश जारी हुए हैं, साथ ही सेवानिवृत्त व्याख्याताओं के बकाया भुगतान के लिए भी आयुक्तालय ने कार्यवाही प्रारम्भ की है। संगठन ने संविदा व्याख्याताओं के मानदेय दरों में परिवर्तन की माँग भी सरकार से की है।

11. **आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं के पूर्व बकाया माँगने पर कार्यवाही की चेतावनी का विरोध** - आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने पत्र जारी कर आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं द्वारा समायोजन से पूर्व सेवा अवधि के बकाया हेतु राज्य सरकार को पक्षकार बनाकर माननीय न्यायालय/अधिकरण में याचिका/प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने को आर.वी.आर.ई.एस. कार्मिकों द्वारा राज्य सेवा में समायोजन हेतु दी गई वचनबद्धता का उल्लंघन मानते हुए कार्यवाही की चेतावनी दी। संगठन द्वारा उक्त चेतावनी पत्र पर त्वरित विरोध दर्ज करवाते हुए उच्च शिक्षा मंत्रीजी से उक्त पत्र को वापिस लेने एवं आर.वी.आर.ई.एस. व्याख्याताओं के अनुदानित सेवा अवधि के बकाया वेतनमान, एरियर, उपादान आदि भुगतान के लिए संबंधित प्रबन्ध समितियों को बाध्य करने की माँग की गई। साथ ही मानवीय संवेदनाओं एवं कर्मचारी हित में समायोजित कार्मिकों की अनुदानित सेवा अवधि के चिकित्सीय अवकाश एवं उपार्जित अवकाश राज्य सेवा में अग्रनित करने का आग्रह किया गया।

12. **निदेशक (अकादमी) के पद पर शिक्षक की नियुक्ति हेतु प्रयास** - आदेश क्रमांक (30) शिक्षा-3/2009 दिनांक 5 अप्रैल 2010 द्वारा निदेशक (अकादमी) पद का सृजन करने के बाद भी शिक्षक का पदस्थापन नहीं करने के संबंध में संगठन ने लगातार कठोर शब्दों में प्रतिक्रिया करते हुए इस पद पर वरिष्ठतम शिक्षक के पदस्थापन की माँग की। संगठन के प्रयास सफलता की ओर एक कदम बढ़े हैं। राजस्थान शिक्षा सेवा (महाविद्यालय शाखा) सेवा नियम 86 में निदेशक (अकादमी) का पद सम्मिलित करने हेतु कार्मिक विभाग को फाइल भिजवाई गई है।

13. **पुनर्गठित महाविद्यालयों के आवश्यक संसाधनों सहित स्पष्ट पुनर्गठन के संबंध में प्रयास** - संगठन के प्रयासों से आठ नवीन पुनर्गठित महाविद्यालयों में शैक्षणिक पदों एवं विषयों के स्थानान्तरण तथा उन पदों पर शिक्षकों को लगाने के आदेश आयुक्तालय द्वारा प्रसारित किये गए। संगठन ने इन महाविद्यालयों के प्राचार्यों को स्पष्ट वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकार देने की माँग की है।

14. **स्नातक कक्षाओं में सीटें बढ़ाने का विरोध** - राज्य के महाविद्यालयों में गत वर्षों से स्नातक पार्ट-प्रथम में लंबित आवेदन पत्रों के कारण 25 प्रतिशत सीटों की अभिवृद्धि करने का संगठन द्वारा उच्च शिक्षा के अधिकारियों एवं मंत्रीजी से भेंट करके एवं पत्र लिख कर विरोध किया गया तथा माँग की गई कि राज्य सरकार विद्यार्थी हित में सीट बढ़ाने के स्थान पर नए वर्ग स्वीकृत करे एवं पिछले 10 वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या में हुई वृद्धि के अनुरूप कार्यभार का आकलन करवाकर तदनुरूप शिक्षकों के नए पद भी स्वीकृत करें।

15. **आर.वी.आर.ई.एस. 2010 के तहत राज्य सेवा में नियुक्ति का विकल्प नहीं देने वाले शिक्षकों के पद पर अनुदान हेतु प्रयास** - आर.वी.आर.ई.एस. 2010 में अनुदानित महाविद्यालय से राजकीय महाविद्यालय में नियुक्ति का विकल्प कुछ शिक्षक साथियों द्वारा नहीं दिया गया एवं वे पूर्व अनुदानित संस्था में ही कार्यरत रहे। राज्य सरकार ने सभी पूर्व अनुदानित शिक्षण संस्थाओं का अनुदान 15 फरवरी 2012 से बंद कर दिया जिससे उन शिक्षक साथियों के वेतन भुगतान का संकट उत्पन्न हो गया। उक्त प्रकरण में उच्चतम न्यायालय द्वारा राज्य सरकार की अपील को खारिज करने के बाद संगठन द्वारा पुनः सरकार को न्यायालय के आदेशों की प्रति प्रस्तुत करते हुए ऐसे शिक्षक साथियों, जिन्होंने आर.वी.आर.ई.एस. 2010 में राज्य सेवा का विकल्प नहीं दिया, के पदों पर अनुदान जारी करने का आग्रह किया गया।

भेंट वार्ताएँ

शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं के तीव्र एवं न्यायोचित समाधान करवाने हेतु संगठन ने समय-समय पर मुख्यमंत्रीजी, उच्च शिक्षा मंत्रीजी, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्रीजी एवं विभाग के अधिकारियों से भेंट की।

* **उच्च शिक्षामंत्रीजी से भेंट** - संगठन शिक्षक समस्याओं के निराकरण के लिए उच्च शिक्षामंत्रीजी से लगातार सम्पर्क में रहा। संगठन द्वारा 5 मार्च, 31 मई एवं 26 दिसम्बर व 2 जनवरी को उच्च शिक्षामंत्रीजी से की गई भेंटों में विभिन्न शिक्षक समस्याओं के शीघ्र समाधान की माँग की। संगठन के दृष्टिकोण से सहमत होते हुए विभिन्न समस्याओं के समाधान के क्रम में मंत्रीजी द्वारा सकारात्मक निर्देश प्रदान किये गए। संगठन द्वारा की गई भेंटों में पदनाम परिवर्तन के अलावा पीएच.डी. के दोहरे लाभ प्रकरण में वसूली निरस्त करने एवं पीएच.डी. प्रोत्साहन वेतन वृद्धियाँ प्रारम्भ करने, पूर्व सेवा का लाभ सभी पात्र शिक्षकों को देने, निदेशक पद पर वरिष्ठतम शिक्षक नियुक्त करने, संतोषजनक ए.सी.आर. के आधार पर चयनित वेतनमान देने, आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों को सी.ए.एस. लाभ देने, सेवारत शिक्षकों को पीएच.डी. कोर्स वर्क से छूट देने अथवा छह माह के सवैतनिक अवकाश की व्यवस्था करने, अन्य राज्य कर्मचारियों की भांति 2-1-2006 से 30-6-2006 के मध्य वार्षिक वेतनवृद्धि वाले शिक्षकों को अतिरिक्त वेतनवृद्धि देने, संविदा शिक्षकों को यू.जी.सी. द्वारा अनुशंसित न्यूनतम वेतन देने, पुस्तकालयाध्यक्षों, शारीरिक शिक्षकों एवं मंत्रायलिक कर्मचारियों के रिक्त पदों को भरने सहित अन्य लंबित समस्याओं को शिक्षक हित में हल करने की माँग की गई। इसके अतिरिक्त बड़े महाविद्यालयों को विखंडित करने के उपरांत अभी तक सुचारू व्यवस्था नहीं किये जाने पर मंत्रीजी का ध्यान दिलाया गया तथा शीघ्र इस समस्या के हल की माँग की गई। संगठन ने 30 जून 2013 के बाद के पे बैंड-4 के लिए शीघ्र स्क्रीनिंग करवाने, आर.वी.आर.ई.एस. में नियुक्त शिक्षकों को उनकी अनुदानित पद पर सेवा अवधि के छठे वेतनमान के एरियर का भुगतान करवाने, पूर्व संचित उपार्जित अवकाश का नकदीकरण करने अथवा व्यापक हित में उपार्जित अवकाश एवं मेडिकल अवकाश को राज्य सेवा में अग्रनीत करने हेतु भी भेंटवार्ताओं में दबाव बनाया है।
* **केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री प्रो. रामशंकर कठेरियाजी से भेंट** - मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं यू.जी.सी. से संबंधित विभिन्न समस्याओं को लेकर संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने 31 मार्च 2016 को भारत सरकार में मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री प्रो. रामशंकर जी कठेरिया से भेंट की। प्रतिनिधिमंडल ने उनके समक्ष पदनाम परिवर्तन करने के अलावा पीएच. डी. हेतु 6 माह के कोर्सवर्क से सेवारत शिक्षकों को मुक्त रखने व रिफ्रेशर ऑरियेन्टेशन कोर्स हेतु छूट की अवधि 31-12-2015 तक बढ़ाने की माँग की।
* **आयुक्त कॉलेज शिक्षा से भेंट** - 5 मार्च एवं 7 नवम्बर 2016 को संगठन के प्रतिनिधि मण्डल ने आयुक्त कॉलेज शिक्षा से भेंट कर आयुक्तालय स्तर पर लम्बित शिक्षक समस्याओं के समाधान पर चर्चा की।
* **अतिरिक्त मुख्य सचिव (उच्च शिक्षा) से भेंट** - 11 मई व 7 नवम्बर 2016 को संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने अतिरिक्त मुख्य सचिव (उच्च शिक्षा) से भेंट कर उन्हें लम्बित शिक्षक समस्याओं की विस्तार से जानकारी दी तथा व्यापक शिक्षक हित में समस्याओं के सकारात्मक समाधान की माँग की।
* **केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री महेन्द्रनाथ पांडे से भेंट** - संगठन के प्रतिनिधि मंडल ने मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री महेन्द्रनाथ पांडे से भेंट कर पदनाम परिवर्तन के अलावा ऑरियेन्टशन, रिफ्रेशर में छूट की अवधि बढ़ाने, पीएच.डी. कोर्स वर्क से मुक्त करने सहित विभिन्न शिक्षक समस्याओं के समाधान की माँग की।

लिखे गये पत्र

शिक्षकों की सामूहिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए संगठन द्वारा लगातार राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा) एवं आयुक्त कॉलेज शिक्षा सहित संबंधित अधिकारियों को लगातार विस्तृत पत्र लिख कर समाधान का प्रयास किया गया। कुछ प्रमुख समस्याओं का समाधान हुए हैं, कुछ समस्याओं के समाधान के प्रयास चल रहे हैं। इस क्रम में संगठन द्वारा पीएच.डी. के दोहरे लाभ प्रकरण का निस्तारण

करने, पूर्व सेवा लाभ सभी पात्र शिक्षकों को देने, निदेशक (अकादमी) पद पर शिक्षक की नियुक्ति करने, संतोषजनक ए.सी.आर. के आधार पर चयनित वेतनमान देने, आर.वी.आर.ई.एस. शिक्षकों को सी.ए.एस. लाभ देने, 30 जून 2013 के बाद पे-बैंड-4 देने, आर.वी.आर.ई.एस. में नियुक्त शिक्षकों को उनकी अनुदानित पद पर सेवा अवधि के छठे वेतनमान के एरियर का भुगतान करवाने, पूर्व संचित उपार्जित अवकाश नकदीकरण हेतु अनुदान उपलब्ध करवाने अथवा उपार्जित अवकाश एवं मेडिकल अवकाश को राज्य सेवा में अग्रनीत करने, परिवीक्षा काल में कार्यरत शिक्षकों को राजकीय सेवा के सम्पूर्ण लाभ देने, सेवारत शिक्षकों को पीएच.डी. कोर्स वर्क से छूट देने, 2-1-2006 से 30-6-2006 के मध्य वार्षिक वेतनवृद्धि वाले शिक्षकों को अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने, संविदा शिक्षकों को यू.जी.सी. द्वारा अनुशंसित न्यूनतम वेतन देने, 1-4-1994 के बाद नियुक्त शिक्षकों को स्थायी करने के आदेश प्रसारित करने, 1-4-1994 के बाद की वरिष्ठता सूची जारी करने, उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन के पारिश्रमिक का समय पर भुगतान करने, नवीन महाविद्यालयों में समुचित संसाधन एवं स्टॉफ की व्यवस्था करने, लोक सेवा आयोग से महाविद्यालय व्याख्याताओं के रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण करवाने, पुनर्गठित महाविद्यालयों का आवश्यक संसाधनों सहित स्पष्ट पुनर्गठन करने, आर.वी.आर.ई.एस. 2010 में राज्य सेवा का विकल्प नहीं देने वाले शिक्षकों के पद पर अनुदान जारी करने आदि विषयों पर राज्यपाल, मुख्यमंत्रीजी, उच्च शिक्षा मंत्रीजी एवं सक्षम अधिकारियों से पत्र व्यवहार किया गया। संगठन ने मानव संसाधन विकास मंत्रीजी को पत्र लिख कर आग्रह किया है कि कतिपय कारणों से कुछ शिक्षक समय पर रिफ्रेशर/ऑरियन्टेशन कार्यक्रम में हिस्सा नहीं ले पाए हैं अतः व्यापक हित में रिफ्रेशर/ऑरियन्टेशन कार्यक्रम की छूट 31 दिसम्बर 2015 तक बढ़ाई जाए।

सीकर अधिवेशन के पश्चात् शिक्षकों की समस्याओं के निराकरण हेतु संगठन ने विभिन्न गतिविधियों, प्रदर्शन, भेंटवार्ताओं, ज्ञापनों एवं पत्राचार के माध्यम से घनीभूत प्रयास किये हैं। संगठन ने अपने प्रयासों के फलस्वरूप पूर्व में लंबित एवं तात्कालिक रूप से उत्पन्न कई समस्याओं का समाधान भी शिक्षक हित में करवाया है। रुक्टा (राष्ट्रीय) कुछ समस्याओं के समाधान से संतुष्ट होकर बैठने वाला नहीं है वरन् निरन्तर संघर्ष करने और अनवरत शिक्षक, शिक्षा व राष्ट्रहित में स्वयं को समर्पित कर बढ़ते चलने वाला है। अभी भी कई प्रमुख समस्याओं का समाधान बाकी है। इनका जब तक शिक्षक हित में समाधान नहीं हो जाता, हम रुकने, थकने या समझौता करने वाले नहीं हैं। आप सभी शिक्षक साथियों के सहयोग एवं समर्थन से शेष सभी समस्याओं के हल हेतु संगठन प्रतिबद्ध है।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

1. **प्रदेश अधिवेशन** - संगठन का 54वाँ प्रान्तीय अधिवेशन 31 दिसम्बर व 1 जनवरी 2016 को श्री कल्याण राजकीय महाविद्यालय, सीकर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राज्य के 1600 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। उद्घाटन एवं देराश्री व्याख्यानमाला के संयुक्त सत्र में देराश्री स्मृति व्याख्यान भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री राम माधव जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानव दर्शन' पर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ रहे। इस अवसर पर बाबा साहेब अम्बेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित स्मारिका ''संगच्छध्वम्'' का भी विमोचन हुआ। खुले सत्र में शिक्षक समस्याओं पर मंथन हुआ। साधारण सभा में 31 मार्च 2015 को समाप्त वित्तीय वर्ष का आय-व्यय लेखा एवं चिट्ठा सदन द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। साधारण सभा द्वारा तीन प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किए गए। 1. समाज में सर्वविध समरसता निर्माण हेतु सामूहिक प्रयास किए जाएँ। 2. राज्य की उच्च शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं का समाधान अविलंब किया जाये। 3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति समग्र चिंतन पर आधारित हो। साधारण सभा द्वारा गत अधिवेशन के पश्चात् दिवंगत शिक्षक साथियों को दो मिनट मौन रख कर श्रद्धांजलि भी दी गई। खुले सत्र के पश्चात् सीकर विभाग में निवास कर रहे 63 सेवानिवृत्त शिक्षक साथियों का सम्मान शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर किया गया। इसके पश्चात् आयोजित सांस्कृतिक संध्या में स्थानीय कलाकारों ने देश भक्ति एवं भक्ति रस से सराबोर नाट्य एवं संगीतमय प्रस्तुतियाँ देकर उपस्थित शिक्षकों को भाव विभोर कर दिया। अधिवेशन में आयोजित शैक्षिक संगोष्ठी में 'सामाजिक

समरसता' पर राजस्थान क्षेत्र प्रचारक श्री दुर्गादासजी एवं 'विकास की भारतीय अवधारणा' पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. कार्यकारिणी सदस्य डॉ. बजरंग लाल जी गुप्त के व्याख्यान हुए। अधिवेशन के समारोप सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के शिक्षामंत्री प्रो. वासुदेवजी देवनानी रहे।

2. **संगठन का प्रदेश कार्यकर्त्ता अभ्यास वर्ग सम्पन्न** - संगठन का दो दिवसीय प्रदेश कार्यकर्त्ता अभ्यास वर्ग 9 व 10 जून 2016 को माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर (अजमेर) में सम्पन्न हुआ। कार्यकर्त्ता अभ्यास वर्ग के विभिन्न सत्रों में वैचारिक प्रबोधन एवं संगठनात्मक प्रशिक्षण हुआ। अभ्यास वर्ग में प्रदेश के सभी 18 विभागों से 143 कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

3. **शिक्षा के समुन्नयन से सम्बन्धित विषयों पर प्रान्तीय/राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ सम्पन्न** - रुक्टा (राष्ट्रीय) एवं शैक्षिक मंथन संस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षा के समुन्नयन से सम्बन्धित विषयों पर कुल 7 प्रदेश/राष्ट्र स्तरीय संगोष्ठियाँ सम्पन्न हुईं। कोटा में 'उच्च शिक्षा में गुणवत्ता', अजमेर में 'शिक्षा में स्वायत्तता', जयपुर में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति', जोधपुर में 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा का पुनरुत्थान', उदयपुर में 'शिक्षा में गुणवत्ता', भरतपुर में 'व्यावसायिक मूल्य एवं मूल्य आधारित शिक्षा' विषयों पर संगोष्ठियाँ सम्पन्न हुईं। इन संगोष्ठियों में 188 शोध पत्र प्रस्तुत किये गए तथा 1652 संभागियों ने भाग लिया। इसके अलावा कोटा एवं अलवर इकाईयों द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर परिचर्चाएँ आयोजित की गई, साथ ही संगठन के सहयोग से अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ एवं म.द.स. विश्वविद्यालय अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में 'उच्च शिक्षा में परीक्षा सुधार' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी भी सम्पन्न हुई।

4. **शिक्षण संस्थानों में देश विरोधी घटनाओं का विरोध** - जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकता में देश विरोधी घटनाओं एवं इन घटनाओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नाम देने का संगठन ने भरसक विरोध किया। इसे संज्ञान में लेते हुए केन्द्र के आह्वान पर रुक्टा (राष्ट्रीय) की प्रदेश कार्यकारिणी ने इस प्रकार की घटनाओं एवं उनके समर्थन की निंदा करते हुए रैलियों एवं संगोष्ठियों के माध्यम से जन-जागरण किया। संगठन के आह्वान् पर राज्य की समस्त इकाईयों से 4000 से अधिक शिक्षकों के हस्ताक्षरित ज्ञापनों को माननीय राष्ट्रपति जी के नाम भेजा गया। इन ज्ञापनों के द्वारा संगठन ने माननीय राष्ट्रपति जी से कतिपय संगठनों द्वारा अपने हित साधने के लिए शिक्षा मंदिरों के दुरुपयोग रोकने हेतु हस्तक्षेप करने का आग्रह किया गया।

5. **कर्त्तव्य बोध दिवस** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के आह्वान पर प्रदेश की योजनानुसार संगठन की 97 इकाईयों में 12 जनवरी से 23 जनवरी के मध्य इकाई स्तर पर कर्त्तव्य बोध दिवस मनाया गया। जिसमें संतों, शिक्षाविदों, चिंतकों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कर्त्तव्य पालन हेतु प्रेरित किया।

6. **नवसंवत्सर कार्यक्रम** - केन्द्र के आह्वान पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रुक्टा (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाइयों ने भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् २०७३ समारोह पूर्वक मनाया। शिक्षक समुदाय द्वारा व्यक्तिशः मित्रों एवं संबंधियों को बधाई संदेश एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की गईं। सामूहिक रूप से महाविद्यालय/विश्वविद्यालय परिसर में तथा चौराहों पर सभी को तिलक लगाकर एवं प्रसाद वितरित कर शुभकामनाएँ दी गई। इसके अतिरिक्त अजमेर, बारां, अलवर, जयपुर, कोटा, दौसा, चुरू, श्रीगंगानगर, केकड़ी एवं उदयपुर में भारतीय नववर्ष के महत्व एवं भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता पर संगोष्ठियाँ भी आयोजित की गई।

7. **अम्बेडकर जयंती पर नमन** - संगठन की विभिन्न इकाईयों द्वारा बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती पर उनके कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए उनके द्वारा बताई समरसता की राह पर चलने का संकल्प लिया गया।

8. **गुरु वंदन कार्यक्रम** - केन्द्र की योजना के अनुरूप रुक्टा (रा.) की 141 इकाईयों द्वारा प्रदेश भर में गुरु-वंदन कार्यक्रम सम्पन्न किये गये। इस अवसर पर आदिगुरु महर्षि वेदव्यास को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भारत की गुरु-शिष्य परम्परा, उनके बीच पावन संबंध और वर्तमान में उनकी भूमिका पर प्रेरक व्याख्यान आयोजित किए गए। प्रबुद्ध एवं चिंतनशील शिक्षकों/वक्ताओं द्वारा आदि गुरुओं के प्रेरणास्पद आचरण एवं त्याग के उदाहरणों से प्रेरित होकर बेहतर समाज निर्माण की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता जताई गई।

9. **प्रदेश कार्यकारिणी बैठकें** – 21 फरवरी, 19 नवम्बर 2016 व 10 जनवरी 2017 को संगठन की प्रांतीय कार्यकारिणी तथा 8 जून एवं 21 अगस्त 2016 को विस्तृत कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुईं। इनमें संगठन की विभिन्न गतिविधियों एवं आगामी कार्ययोजना पर गंभीरता से विचार विमर्श कर निर्णय लिए गए।

10. **सदस्यता** – पिछले तीन वर्षों से संगठन की सदस्यता सीमित समय में करने की योजना पर कार्य हुआ है। पिछले वर्षों में रहे उत्साहजनक परिणाम के आलोक में इस वर्ष प्रदेश कार्यकारिणी ने संगठन की सदस्यता 1 से 15 जुलाई के मध्य ही एकत्र करने का निर्णय किया। सभी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सार्थक परिणाम प्राप्त हुए एवं इस सत्र् हेतु शिक्षकों की कुल **5716** सदस्यता प्राप्त हुई है। जो कि गत वर्ष की सदस्यता से 460 अधिक रही। यह उल्लेखनीय है कि नए सत्र के प्रथम दिन अधिकतम सदस्यता दिवस पर सभी कार्यकर्त्ताओं के सक्रिय योगदान से एक ही दिन में रिकार्ड 4387 सदस्यता का संग्रहण हुआ।

11. **राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक** – अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 6–7 फरवरी को रांची, 22 मई को मैसूर एवं 24–25 सितम्बर 2016 को अल्मोड़ा उत्तराखण्ड में सम्पन्न हुई। संगठन की ओर से इन बैठकों में अध्यक्ष, महामंत्री एवं प्रदेश महिला प्रतिनिधि ने सक्रिय सहभाग किया।

12. **प्रदेशभर में वृक्षारोपण कार्यक्रम** – संगठन की 43 इकाईयों ने पर्यावरण संरक्षण में अपना सहयोग करते हुए महाविद्यालय परिसरों में लगभग 1000 वृक्षारोपण किए तथा उनकी सारसंभाल का संकल्प लिया।

13. **अखिल भारतीय महिला कार्यकर्त्ता वर्ग** – अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा बड़ोदरा में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय महिला कार्यकर्त्ता वर्ग में रुक्टा (राष्ट्रीय) की ओर से सात महिला कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। वर्ग में शिक्षिकाओं की सद्य स्थिति, मूल्य शिक्षा में सहभाग, नवागत पीढ़ी में संस्कार व्यवस्था हेतु प्रयास, कार्य वृद्धि में महिला कार्यकर्त्ताओं की भूमिका आदि विषयों पर गहन चिंतन–प्रबोधन हुआ।

14. **इकाईयों द्वारा सम्पन्न विशेष कार्यक्रम** – मकर संक्रान्ति पर्व पर कन्या महाविद्यालय अलवर द्वारा गाडुलिया लुहार बस्ती में निर्धन व्यक्तियों को गर्म कपड़ों का वितरण, कोटा, जयपुर, चुरू व अन्य इकाईयों द्वारा बसंत पंचमी पर्व एवं अजमेर इकाई द्वारा प्रताप जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किये गए। इसके अतिरिक्त अजमेर, चुरू एवं अलवर इकाईयों द्वारा 'पाठ्यक्रम का स्वरूप' विषय पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गई।

शिक्षक समस्याओं के समाधान हेतु तथा संगठन के कार्य एवं विचार के विस्तार हेतु हुई गतिविधियाँ योजनानुसार सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकी हैं तो इसका सम्पूर्ण श्रेय संगठन के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं और आप सब शिक्षक बंधु, बहिनों को ही है। संगठन के प्रति आप सबके प्रेम, सहयोग एवं विश्वास के कारण ही यह संभव हो पाया है। इन गतिविधियों या समस्या–समाधान की प्रक्रिया में आपकी अपेक्षानुसार जो कार्य नहीं हुआ है तो उसके लिए पूर्णत: स्वयं को उत्तरदायी मानकर आपसे करबद्ध क्षमायाचना करता हूँ तथा आपके निरन्तर सहयोग, मार्गदर्शन एवं विश्वास हेतु हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)

[महामंत्री]

55वें प्रान्तीय अधिवेशन में साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव नं. 1 शैक्षणिक परिसरों को ज्ञान के सर्वोत्कृष्ट केन्द्र बनाने के लिए समन्वित प्रयास किए जाएँ।

हमारे विश्वविद्यालय और महाविद्यालय परिसर सहस्त्राब्दियों से संचित-परिष्कृत ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित कर मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने की कर्मस्थली रहे हैं। शिक्षक के समक्ष प्रतिवर्ष अनेक मेधावी विद्यार्थियों की ज्ञान-पिपासा शांत और उद्‌भ्रांत करने का अवसर होता है। अनगढ़ किन्तु श्रेष्ठ मेधा उसके हाथों परिष्कृत होने परिसर पहुँचती है, जिससे शिक्षक का जीवन भी सदैव चुनौतीपूर्ण, शोधाभिमुखी और ज्ञान-दर्शन के वर्द्धमान सोपानों की सुखद यात्रा बन उसे सदैव जीवन्त बनाए रखता है। वह स्वयं भी ज्ञान-दर्शन की गंगोत्री का पथिक होता है और जीवन भर अपने विषय का शोधार्थी बन नवीन विवेचनाएँ खोजने-गढ़ने का प्रयत्न करता है। किन्तु बदलते भौतिकवादी दौर में शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन मात्र समझी जाने लगी है। शिक्षार्थी नौकरी प्राप्त करने का प्लेटफार्म समझ कर ''डिग्री'' अर्जित करने हेतु उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश लेते हैं, जिसका आधार प्रायः अभिभावकों की महत्वाकांक्षा द्वारा पोषित सोच है। आज उच्च शिक्षा विद्यार्थी की रुचि के अनुसार विषय चयन कर नहीं ग्रहण की जा रही वरन् किस विषय से 'जॉब' की कितनी व्यापक संभावनाएँ हैं, यह ज्ञानार्जन का आधार बनता जा रहा है। यह विडम्बना विचारणीय है।

रुक्टा (राष्ट्रीय) के 55वें अधिवेशन की यह साधारण सभा महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों से यह आह्वान करती है कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता के रूप में अपनी महत्ती भूमिका को समझते हुए शिक्षा परिसर को अपनी पावन कर्म भूमि समझें, शिक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को जीवन मूल्य बनाएँ, विद्यार्थियों को शोधपरक शैली में विषय की गंभीरता-गहराई व चुनौतियों का नियमित अध्यापन कराते हुए स्वयं को मात्र विषय शिक्षक ही न समझें वरन् विद्यार्थी के व्यक्तित्व के समग्र विकास में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ। साधारण सभा का यह सुविचारित मत है कि शिक्षक को सूचना-प्रौद्‌योगिकी के क्षेत्र में अंतर्जाल आदि के स्तर पर हो रहे नवीन प्रयोगों के ज्ञान और अभ्यास से स्वयं को अधिकाधिक समृद्‌ध करना चाहिए। साथ ही शोध और अनुसंधान कार्य को प्राथमिकता के स्तर पर लेते हुए ऐसे शोध विषयों का चयन करें, जिनसे अखिल विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो। इस कार्य में वे अपने शिक्षार्थियों की भी अधिकतम और सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करें, जिससे हमारे परिसर शोधानुसंधान के प्रमुख केन्द्र बन सकें।

चूंकि विश्वविद्यालय/महाविद्यालय स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थी वर्ग के अध्ययन केन्द्र हैं, अतः विद्यार्थी वर्ग से परिपक्वता की अपेक्षा रखते हुए साधारण सभा उनका आह्वान करती है कि वे अपने विश्वविद्यालय/महाविद्यालय को ज्ञानार्जन का पवित्र मंदिर मानकर जिज्ञासा का भाव लेकर ही परिसर में प्रवेश लें, अपनी रुचि के विषयों का चयन करें तथा नियमित रूप से कक्षाओं में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करते हुए शिक्षकों के समक्ष निस्संकोच रूप से अपनी जिज्ञासाओं को प्रकट करें, विद्याव्रती बनें और पूर्ण अनुशासन सहित अपने गुरुजनों का सम्मान करें। अपने विद्यार्थी जीवन को भावी जीवन का अवलम्ब मानकर इस समय को पूर्णरूपेण परिसर में उपलब्ध शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक व शिक्षणेत्तर गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के साथ जीएँ। उत्कृष्टता अर्जित करने का लक्ष्य रखें। परिसर को स्वच्छ, सुन्दर व अध्ययन का श्रेष्ठ केन्द्र बनाने में सहयोग दें।

यह साधारण सभा अभिभावकों का भी आह्वान करती है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में गहरी रुचि दिखाते हुए उनकी पसन्द के विषयों में प्रवेश दिलाएँ। अपने बच्चों में राष्ट्र प्रेम, संकल्पित जीवन, अनुशासन और उत्कृष्टता के संस्कार पोषित करें। बच्चों को अपनी महत्वाकांक्षा का साधन न मानते हुए उनकी शिक्षा को सिर्फ 'जॉब' से न जोड़ें। अपने बच्चों की विश्वविद्यालय/महाविद्यालय में उपस्थिति से लेकर अनुशासित आचरण, सह-शैक्षणिक व शिक्षणेत्तर गतिविधियों में रुचि का भी पूरा ध्यान रखें।

रुक्टा (राष्ट्रीय) के 55वें अधिवेशन की साधारण सभा सरकार से यह अपेक्षा रखती है कि वह विश्वविद्यालय/महाविद्यालय परिसर में संचालित समस्त प्रशासनिक, शैक्षणिक, सहशैक्षणिक व अन्य गतिविधियों हेतु आवश्यक संसाधन व सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ। नवीन महाविद्यालय पूर्ण तैयारी के बाद यथा भवन निर्माण, प्रशासनिक-शैक्षणिक-कार्मिकों को नियुक्ति तथा अन्य ढांचागत सुविधाओं की उपलब्धता के पश्चात् ही खोले जाएँ। प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में समस्त पद शीघ्र भरे जाएँ। उपयुक्त प्रशिक्षण का बन्दोबस्त समय-समय पर किया जाए तथा शिक्षा के सम्पूर्ण संचालन, नीति निर्माण एवं व्यवस्थापन हेतु शिक्षाविदों की शत प्रतिशत भूमिका सुनिश्चित हो।

रुक्टा (राष्ट्रीय) के 55 वें अधिवेशन की साधारण सभा का यह दृढ़ विश्वास है कि शिक्षकों, शिक्षार्थियों, अभिभावकों व सरकार के समन्वित प्रयासों से हमारे शैक्षणिक परिसर ज्ञान के सर्वोत्कृष्ट केन्द्र बन सकेंगे एवं ज्ञानदक्ष जिम्मेदार युवाओं के सृजन की गंगोत्री सिद्ध होंगे।

प्रस्ताव क्रं. 2 भारतीय परिवार व्यवस्था के संरक्षण में अपनी भूमिका निभाएँ।

भारतीय समाज-रचना में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व मध्यवर्ती स्थान परिवार या कुटुम्ब का है। समाज-हितैषी ऋषियों ने आदर्श समाज के लिए जो व्यवस्था, सिद्धान्त व संस्कार आवश्यक समझे; उन्हें परिवार के माध्यम से ही देने की व्यवस्था की। अधुनातन वैश्विक परिदृश्य का विचार करें तो सर्वत्र स्वार्थ का प्रसार है, सन्देह-अविश्वास-द्वेष-हिंसा का विस्तार है, संघर्ष ही जीवन-क्रम बन रहा है, विवाह-विच्छेद बढ़ रहे हैं, परिवार विशृंखलित-विघटित व सूक्ष्मातिसूक्ष्म हो रहे हैं, पर-शोषण से स्व-पोषण की अपसंस्कृति विकसित हो रही है। ऐसी अवस्था में 'भारतीय परिवार' या 'हिन्दू कुटुम्ब' एक वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में विश्व का ध्यानाकर्षण कर रहा है।

यद्यपि काल के प्रभाव से तथा व्यक्तिनिष्ठ-भोगनिष्ठ पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव से अपने देश के सामाजिक जीवन में पारिवारिक मूल्यों का क्षरण हुआ है; किन्तु यह भी सत्य है कि यह भारतीय परिवार पद्धति ही है जो नाना संस्कृतियों के उत्थान-पतन के बीच सहस्राधिक वर्ष से सातत्य बनाए हुए है, जो विश्व के कल्याण की कामना करती है और मनस्तोष एवम् आत्मशान्तिपूर्ण जीवन के रहस्य की जिज्ञासा लिए पश्चिमी जगत् के अनेक विद्वान् आज जिसकी ओर निहार रहे हैं। इसलिए,शिक्षा के साथ ही अपने सामाजिक सरोकारों के लिए प्रतिबद्ध राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की साधारण सभा का यह सुचिन्तित व दृढ़ मत है कि अपनी परिवार-व्यवस्था के सातत्य-रक्षण, विलुप्त मूल्यों के पुन:स्थापन तथा आयातित विकृतियों के परिमार्जन के लिए हमें सचेष्ट होना होगा।

परिवार से समुदाय बनाना, उसमें मेलजोल बढ़ाना, उन्नत संस्कार से सम्पन्न उत्तम व्यक्ति का निर्माण करना, अड़ोस-पड़ोस के व्यक्ति-पशु-पक्षी-पेड़-पौधे-पत्थर-मिट्टी आदि सब चराचर के साथ परस्पर सहयोग से आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करना, 'अहम्' के व्यष्टिभाव का क्षरण करते हुए 'वयम्' के समष्टिभाव का वर्धन करना - इन सब बातों में भारतीय-परिवार की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। यहाँ सबकी शक्ति का उपयोग परिवार के श्रेयार्थ है, प्रेयार्थ नहीं। अर्थोपार्जन उत्तरदायित्व है, अधिकार या उपकार नहीं। कुटुम्बजनों के बीच वैयक्तिक सामर्थ्य के अनुसार अर्थार्जन में भिन्नता होने पर भी फलोपभोग में समानता रहती है। पश्चिम के 'जो कमाएगा, सो खाएगा' के विपरीत यहाँ 'जो कमाएगा, सो खिलाएगा' है। भारतीय परिवार संकोच का नहीं, विस्तार का विधान है। सम्बन्धवाची जितने पद (परदादा-परदादी, परनाना-परनानी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, बुआ-फूफा, भाई-भाभी, बहन-बहनोई, ननद-ननदोई, साला-सलहज, साली-साढ़ू इत्यादि) हमारे यहाँ उपलब्ध हैं, उतने संसार में कहीं नहीं। हमें अंग्रेज़ी के समान 'मेटर्नल' या 'पैटर्नल' जैसे विशेषणों की ज़रूरत नहीं पड़ती। किन्तु विगत एक-डेढ़ शताब्दी के कालखण्ड में भारतीय परिवार-व्यवस्था में भी शनै: शनै: क्षरण हुआ है। प्रतिवर्ष वर्धमान वृद्धाश्रम उसी क्षति के सूचक हैं। हमारे परिवार तथोक्त 'माइक्रो न्यूक्लिअर फेमिलीज़' में तेजी से तब्दील होते जा रहे हैं। ऐसी 'फेमिलीज़' में बच्चों के लिए दादा-दादी, चाचा-ताऊ जैसे सन्तापहारक 'शॉक ऑब्ज़र्वर्स' का न रहना चिन्ता का विषय है। तथापि यह आशा है और सहस्राधिक वर्षों के भारत के इतिहास का पाठ भी यही कहता है कि हमारी संस्कृति इतनी दृढ़मूल है कि हम इस सामाजिक प्रदूषण को भी विफल करेंगे।

रुक्टा (राष्ट्रीय) की यह साधारण सभा शिक्षकों, शिक्षाविदों, शिक्षाहितैषी समाज बन्धुओं व शिक्षार्थियों से आह्वान करता है कि हम परिवार-व्यवस्था के संरक्षण में अपनी प्रत्यक्ष-परोक्ष भूमिका का स्वयमेव वरण करें ! आज विश्व टूटते हुए परिवारों के जिस संत्रास से गुज़र रहा है, उसमें हमें अपने को बचाते हुए जगत् का उद्धार करना है। पश्चिमी बाल-मनश्चिकित्सकों ने भले ही यह कहने में बहुत देर कर दी है कि - ''तनाव-अवसाद-मानसिकविकृति-आत्महत्या-अपराध-व्यसनाधीनता-वैफल्यभावना-हीनताबोध आदि समस्याओं का कारण बेकारी और दरिद्रता नहीं, प्रत्युत भग्न परिवार ही हैं''; परन्तु हमें यथासमय सचेत होना होगा। वे चाहे अब यह घोषणा कर रहे हों कि 'लेट् अस प्रिज़र्व फ़ैमिलीलाइफ़'', पर हम तो कब से कहते रहे हैं कि परिवार 'भूतल का स्वर्ग' है - 'धन्यो गृहस्थाश्रम:।' आज नियति ने यह दायित्व हमें सौंपा है कि अपनी सनातन परिवार-व्यवस्था का संरक्षण करते हुए,अपने समाज का जागरण करते हुए, इसी परिवार-संकल्पना का आदर्श विश्व के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम विश्वकल्याण-सत्र में अपनी आहुति दें।

प्रस्ताव क्रं. 3. राज्य की उच्च शिक्षा क्षेत्र के उन्नयन हेतु शिक्षा व शिक्षकों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता से किया जाये।

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की साधारण सभा पूर्व में पारित एवं अनिस्तारित समस्त प्रस्तावों की पुन:पुष्टि करते हुए शैक्षिक-उन्नयन एवं शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु सरकार से माँग करती है कि निम्न समस्याओं का शीघ्र समाधान किया जाये -

1. महाविद्यालयों में व्याख्याताओं, शारीरिक-शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों और मंत्रालयिक कर्मचारियों के रिक्त पद तुरन्त प्रभाव से भरने की व्यवस्था की जाये एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मापदण्डानुसार पिछले वर्षों में बढ़ी हुई शिक्षार्थियों की संख्या के आधार पर कार्यभार का पुन:निर्धारण किया जाए तदनुसार शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारियों के नवीन पदों का सृजन किया जाये।
2. पूर्व सेवा का लाभ सभी पात्र शिक्षकों को दिया जाये।
3. आर.वी.आर.ई.एस. सेवा के तहत कार्यरत शिक्षकों को समायोजन पश्चात् नियमानुसार देय कॅरियर एडवान्समेंट का लाभ अविलम्ब दिया जाये। आर.वी.आर.ई.एस. सेवा के तहत कार्यरत शिक्षकों को अनुदानित सेवा की बकाया राशि का भुगतान करवाया जाये। इन शिक्षकों के चिकित्सा अवकाश एवं उपार्जित अवकाश राज्य सेवा में अग्रनीत किये जायें।
4. निदेशक/आयुक्त के पद पर वरिष्ठ शिक्षाविद् की ही नियुक्ति की जाये तथा निदेशक (अकादमी) के रिक्त पद को अविलम्ब भरा जाये।
5. शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने हेतु शोध-उपाधि प्राप्त शिक्षकों को यू.जी.सी. मानदण्डानुसार प्रोत्साहन स्वरूप देय वेतन वृद्धि पुन: प्रारम्भ की जाये। शिक्षकों को शोध करने हेतु कोर्स-वर्क की अनिवार्यता से छूट प्रदान की जाये अथवा छह माह के सवैतनिक अवकाश की व्यवस्था की जाए।
6. विभागीय पदोन्नति समिति एवं कॅरियर एडवान्समेन्ट स्कीम के तहत वरिष्ठ, चयनित एवं पे-बैंड-4 के परिलाभों हेतु वर्ष में दो बार नियमित बैठकें आयोजित हों। 30 जून, 2013 के बाद ड्यू पे-बैंड-4 का लाभ शीघ्र प्रदान किया जाये।
7 महाविद्यालय शिक्षकों की परिवीक्षा अवधि को नियमित सेवा मानते हुए वेतन सहित समस्त परिलाभ प्रदान किये जायें।
8. संविदा आधार पर नियुक्त शिक्षकों को यू.जी.सी. द्वारा अनुशंसित न्यूनतम वेतन प्रदान किया जाये।
9. स्नातक महाविद्यालयों के पात्र शिक्षकों को शोध-निदेशक के रूप में पंजीकृत करने की व्यवस्था की जाये।
10. 1994 के पश्चात् नियुक्त महाविद्यालय शिक्षकों के स्थायीकरण आदेश एवं वरिष्ठता सूची जारी की जाये।
11. राज्य सेवा के अन्य कार्मिकों के समान ही जनवरी 2006 से जून 2006 के मध्य ड्यू वेतन वृद्धि वाले महाविद्यालय शिक्षकों को भी छठे वेतनमान में अतिरिक्त वेतनवृद्धि दी जाये।
12. विधि महाविद्यालयों की संबद्धता आदि से संबंधित बाधाओं को शीघ्र दूर किया जाये।
13. विश्वविद्यालयों के सिण्डीकेट आदि निकायों में लोकतांत्रिक पद्धति से महाविद्यालय-शिक्षकों को उचित प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाये।
14. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत वेतनमान दिये जायें।

शोक-प्रस्ताव

रुक्टा (राष्ट्रीय) के 54वें अधिवेशन के पश्चात् शिक्षा जगत के हमारे कुछ साथी प्रभुतत्व में लीन हो गए हैं। संगठन के 55वें अधिवेशन की यह साधारण सभा प्रो. ईश्वर राम जांगिड़ (चुरू), प्रो. अनूप कुमार (अजमेर), प्रो. एच.एस. शर्मा (चिमनपुरा), प्रो. सीताराम गालव (कोटा), प्रो. आर. के. माथुर (ब्यावर), प्रो. बी. एम. शर्मा (बीकानेर), प्रो. बबीता सिंघल (कोटा), प्रो. विनोद जोशी (जयपुर), प्रो. बी. एल. सोनी (जयपुर), प्रो. कोमल मेहता (बांसवाड़ा), प्रो. अनिल सक्सेना (भरतपुर), प्रो. एस. एन. शर्मा (पोकरण), प्रो. मुरालीलाल गुप्ता (नीमकाथाना), प्रो. अशोक मोंगा (श्रीगंगानगर), प्रो. आर. सी. चौधरी (सांभरलेक) डॉ. नंदन भार्गव (कोटा), प्रो. रोशनलाल नेपालिया (जयपुर), प्रो. शांतीलाल आच्छा (भीलवाड़ा), प्रो. मनीष अग्रवाल (भरतपुर), प्रो. वी. पी. मेहता (ब्यावर), प्रो. ओ. बी. शर्मा (चुरु), प्रो. मलखानसिंह यादव (कोटपुतली), प्रो. प्रेम जैन (कोटा) के निधन से शिक्षा जगत में हुई अपूर्णनीय क्षति के लिए गहन शोक प्रकट करती है एवं ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शांति एवं उनके परिजनों को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

आय-व्यय खाता

31 मार्च 2016 को समाप्त वित्तीय वर्ष के लिए

व्यय	राशि (रु.)	आय	राशि (रु.)
डाक व्यय	26,648.00	सदस्यता 2015-2016	5,42,600.00
दूरभाष व मोबाईल	7,602.00	आजीवन सदस्यता	10,000.00
प्रिंटिंग व स्टेशनरी	64,716.00	इकाइयों से विशेष सहायता	500.00
यात्रा व्यय	1,20,554.00	बचत खाते पर ब्याज	27,556.00
पारिश्रमिक	18,000.00	मियादी जमा खाते पर ब्याज	2,21,849.00
कार्यकारिणी बैठक व्यय	27,730.00	स्मारिका आधिक्य	1,38,000.00
विविध व्यय	2,750.00	पंजीयन शुल्क	2,26,000.00
अ.भा. रा. शैक्षिक महासंघ	29,400.00		
चिंतन बैठक(ए.बी.आर.एस.एम.)	70,250.00		
बैंक चार्जेज	156.00		
योग	**3,67,806.00**		
आय का व्यय पर आधिक्य	7,98,699.00		
कुल योग	**11,66,505.00**	**योग**	**11,66,505=00**

चिट्ठा 31 मार्च, 2016

दायित्व	राशि (रु.)	सम्पत्तियाँ	राशि (रु.)
आय का व्यय पर आधिक्य -			
गत वर्षों का आधिक्य	29,94,142.00	**रोकड़ बचत बैंक खाता**	
इस वर्ष का आधिक्य	7,98,699.00	आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	5,976.00
कुल आधिक्य	**37,92,841.00**	यूको बैंक	2,33,571.00
महामंत्री को देने बाकी	16,146.00	**योग**	**2,39,571.00**
		मियादी जमा खाता	
		आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	11,05,331.00
		यूको बैंक	24,642,109.00
		योग	**35,69,440.00**
योग	**38,08,987.00**	**कुल योग**	**38,08,987.00**

ह.
डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत
अध्यक्ष

ह.
डॉ. नारायण लाल गुप्ता
महामंत्री

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने रुक्टा (राष्ट्रीय) के 31 मार्च 2016 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष की लेखा पुस्तकें, आय एवं व्यय खाता और चिट्ठे का अंकेक्षण किया है और मैं प्रतिवेदित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमारे अंकेक्षण उद्देश्य हेतु आवश्यक समस्त सूचनाएँ एवं स्पष्टीकरण मैंने प्राप्त कर लिये हैं। मेरी राय में और मेरी जानकारी के अनुसार तथा मुझे जो सूचनाएँ और स्पष्टीकरण दिये गए हैं, वे संगठन की स्थिति, विवरण (चिट्ठा) का 31 मार्च 2016 को सही और प्रमाणित स्थिति प्रकट कर रहा है और इस तिथि को आय का व्यय पर आधिक्य भी प्रकट हो रहा है।

ह.
(डॉ. सोमकान्त भोजक)
अंकेक्षक